ध्यान दें:

3

प्रहेलिका और समस्या श्लोक

प्रिय छात्रों, आप इस पाठ में प्रहेलिका और समस्या श्लोक पढ़ रहे हैं। हमारी परम्परा में चौंसठ कलाएँ प्रसिद्ध हैं। उनमें समस्या पूर्ति और प्रहेलिका अन्तर्निहित हैं। अर्थयुक्त निरर्थक या असम्भवार्थयुक्त वाक्य श्लोक का प्रायः एक पाद रूप होता है। उसका नाम समस्या है। उस समस्या का परिहार अथवा साधुत्व उपपादन कवि अपने प्रतिभा सामर्थ्य से करता है। समस्यात्मक एक पाद को लेकर अवशिष्ट तीन पादों से समस्या का परिहार प्रदर्शित किया जाता है। यह प्राचीन कविता का विनोदात्मक प्रकार है। यह कवि की कल्पना सामर्थ्य के निकट होती है। क्लिष्ट एवं विचित्र अर्थयुक्त प्रश्नरूप वचन प्रायः प्रहेलिका होती है। उसका उत्तर श्लोक में नहीं रहता। उसे श्लोक पढ़ने वाले के द्वारा स्वयं ही बताना चाहिए। यहाँ सुभाषितरत्नकोश तथा भोजप्रबन्धादि ग्रन्थों से संकलित कुछ श्लोक प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- समस्या रूप काव्य के प्रकार का ज्ञान कविकल्पना सामर्थ्य का बोध आदि विषय को समझ पाने में;
- समस्याओं के परिहार से होने वाले बोध को समझ पाने में;
- संस्कृत साहित्य में प्रहेलिकाओं का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- प्रहेलिका रूप श्लोकों की रचना में मार्गदर्शन प्राप्त कर उत्साहपूर्वक नव- प्रहेलिका-काव्य-रचना में समर्थ हो पाने में।

3.1) समस्या श्लोक

3.1.1) समस्या

आगे दिये समस्या वाक्य का कोई भी अर्थ नहीं जानता है। क्योंकि यहाँ प्रयुक्त शब्दों का शास्त्र में अथवा व्यवहार में अर्थ नहीं है। फिर भी यहाँ निरर्थक पदसमुदाय का किसी समुचित अर्थ में समन्वय

ध्यान दें:

कवि द्वारा सिद्ध किया जा रहा है। किसी कवि ने समस्या का परिहार किया। यथा

राजा के स्नान के समय कामपीडिता तरुणी के हाथों से स्वर्णकलश गिर गया। जिससे सोपान पंक्ति युक्त मार्ग को प्राप्त होकर वह ठठण्ठठण्ठं ठठठण्ठठण्ठः की ध्वनि उत्पन्न कर रहा है।

राज्याभिषेके मदविह्वलायाः हस्ताच्च्युतोऽ हेमघटो तरूण्याः।
सोपानमासाद्य करोति शब्दं ठठण्ठठण्ठं ठठठण्ठठण्ठः॥ (भोजप्रबन्धः-317)

अन्वयार्थ- राजाभिषेके=राज्ञः स्नानसमये मदविह्वलायाः=कामपीडितायाः, युवत्याः= तरुण्याः, हस्तात्= करात्, च्युतः = भ्रष्टः, हेमघटः= सुवर्णकलशः, सोपानम् = सोपानपङ्क्तियुक्तं मार्गम्, आसाद्य= प्राप्य, शब्दम् = ध्वनिं,करोति=जनयति, ठठंठठठं ठठठंठठठः इति।

भावार्थ- कोई युवती किसी राजा को स्नान करवा रही है। वह राजा के शारीरिक सौन्दर्य को देखकर कामपीडित होकर उद्विग्न मन वाली हो गई। उद्वेग के कारण उसके हाथ से स्नानोपयोगी स्वर्णकलश गिर गया। तब गिरा हुआ वह स्वर्ण कलश उसी की पास में स्थित सोपानपंक्ति पर जाकर वहीं लुढकता हुआ नीचे चला गया। उस समय सोपानपंक्ति मार्ग से जब वह गिरता हुआ जाता है तब वह ठठण्ठठण्ठं ठठठण्ठठण्ठः इस प्रकार ध्वनि करता है। इस प्रकार कवि ने किसी रमणीय प्रसङ्ग की कल्पना करके समस्या का मनोहर परिहार प्रदर्शित किया। यहाँ ठठण्ठठण्ठं ठठठण्ठठण्ठः इत्यादि पदसमुदाय सोपान मार्ग से गिरते हुए स्वर्ण कलश की ध्वनि है यही कवि का आशय है। निरर्थक वह पदसमुदाय कलशध्वनि की अनुकरण ध्वनिरूप है ऐसी कल्पना करके कवि समस्या का चमत्कारकारक परिहार प्रदर्शित करता है। अनुकरण रूप शब्द का विशिष्ट कोई अर्थ नहीं होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

राजाभिषेके राज्ञः अभिषेकः राजाभिषेकः - षष्ठी तत्पुरुष समासः,। तस्मिन् राजाभिषेके

मदविह्वलायाः मदेन विह्वला मदविह्वला, तस्याः मदविह्वलायाः-तृतीया तत्पुरुष समासः।

हेमघटः- हेम्नः घटः - हेमघटः षष्ठी तत्पुरुष समासः।

आसाद्य- षदलृ- गतौ इति धातुः, अस्मात् स्वार्थिकणिजन्तात् आङ्गुपसर्गपूर्वकात् ल्यप्प्रत्ययः।

3.1.2) समस्या "शतचन्द्रं नभःस्थलम्'' (आकाश शतचन्द्रयुक्त है)

समस्या का अर्थ- आकाश शतचन्द्रयुक्त है। हम देखते हैं कि आकाश में एक ही चन्द्रमा सुशोभित होता है। शतचन्द्रात्मक आकाश कभी नहीं दिखाई देता है। इसलिए शतचन्द्रात्मक आकाश है यह वचन तो वास्तविकता के नितांत विपरीत है इसलिए यह कठिनाई ही समस्या है। फिर भी किसी कविश्रेष्ठ ने प्रतिभा बल से समीचीन परिहार प्रदर्शित किया है। जैसे

दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा।
दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्रं नभःस्तलम्॥ (सुभा- र-भा- समस्या 10)

श्रीकृष्ण के हस्तप्रहार (मुष्टि) से भयभीत मन वाले चाणूर नामक मल्ल के द्वारा शतचन्द्रात्मक आकाश देखा गया।

अन्वयार्थ- दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा = श्रीकृष्ण के कर प्रहार से भयभीत मन वाले चाणूरमल्लेन = चाणूर नामक मल्ल से, शतचन्द्रं = शतचन्द्रयुक्त, नभःस्थलम् = आकाश को, दृष्टं= देखा।

ध्यान दें:

भावार्थ- द्वापरयुग में चाणूर नामक राक्षस था। श्रीकृष्ण ने मुष्टिप्रहार से उसे मार दिया, ऐसा पौराणिक कथाओं में सुना जाता है। उस कथा को आधार बनाकर कवि ने इस समस्या का परिहार प्रदर्शित किया है।

श्रीकृष्ण ने चाणूर पर कराघात किया जिससे नीचे गिरा हुआ चाणूर भय से कम्पित हो गया। उसके कम्पन्न से एक चंद्रयुक्त आकाश अनेक चंद्रयुक्त-सा दिखने लगा। भय से कम्पित चाणूर की समस्या का परिहार रमणीयता से प्रदर्शित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

दामोदरस्य कर- दामोदरकरः- षष्ठी तत्पुरुष समासः। दामोदरकरस्य आघातः दामोदरकराघातः- षष्ठी तत्पुरुष समासः, दामोदरकराघातेन विह्वलीकृतं चेतः यस्य सः दामोदरकराघातविह्वलीकृतचेतसा बहुव्रीहिसमासः।

चाणूरमल्लः- चाणूरश्च असौ मल्लः - चाणूरमल्लः ख्र, कर्मधारयः समास।

शतचन्द्रम्- शतं चन्द्राः यस्मिन् तत् शतचन्द्रम्ख्र, बहुव्रीहिसमासः।

नभःस्थलम्- नभसः स्थलं नभःस्थलम्-, षष्ठी तत्पुरुष समासः, अथवा नभ एव स्थलं नभःस्थलम्-, कर्मधारयः समास।

3.1.3) समस्या- गगनं भ्रमरायते (भ्रमखत होता है)

समस्या का अर्थ- यहाँ इसका अर्थ है कि आकाश भ्रमरवत् होता है। हम देखते हैं कि आकाश अपरिमित होता है जिसके परिमाण का पार कोई भी नहीं जान सकता। अनंत लोक आकाश में अंतर्निहित हैं। वैसा महत् आकाश भ्रमर के समान होता है यही महती समस्या है। आकाश का परिमाण कहाँ, भ्रमण का परिमाण कहाँ। इस प्रकार अत्यंत विरुद्ध होने के कारण यह समस्या है। किसी कवि ने इसका परिहार चमत्कार रूप से किया है। जैसे

स्वस्ति क्षत्रियदेवाय जगद्देवाय भूभुजे।
यद्दशःपुण्डरीकान्तः गगनं भ्रमरायते॥ (सुभा.र.भा. समस्या 17)

क्षत्रिय श्रेष्ठ, जगत आराध्य, भूमिपालक राजा के लिए सब शुभ हो, जिनके कीर्ति-कमल में आकाश भ्रमरवत् व्यवहार करता है।

अन्वयार्थ- क्षत्रियदेवाय=क्षत्रियश्रेष्ठ के लिए, जगद्देवाय-जगत् के आराध्याय, भूभुजे = भूमिपालक राजा के लिए, स्वस्ति=शुभं हो, यद्दशःपुण्डरीकान्तः= जिनके कीर्ति-कमल में, गगनं = आकाश, भ्रमरायते=भ्रमर है।

भावार्थ- क्षत्रिय श्रेष्ठ कोई राजा था। वह अपने श्रेष्ठ चरित से जगत देव बन गया। जिसे प्रजा अपना आराध्य मानती थी। वह राजा प्रजापालनादि कर्तव्यों से सभी लोकों में प्रसिद्ध हो गया। उसकी कीर्ति सभी लोकों में फैल गयी थी। उसकी कीर्ति का अतिशय वर्णन करते हुए कवि ने कहा कि उस राजा की कीर्ति रूपी कमल में आकाश भी भ्रमरवत् अन्तर्निहित है।

यहाँ आकाश को भ्रमर बनाने के लिए कवि ने राजा की कीर्ति रूपी कमल यह औचित्यपूर्ण एवं मनोहर कल्पना की है। भ्रमरभूत आकाश कमल में अन्तर्निहित होता है, यह सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

यद्दश:पुण्डरीकान्त:-यस्य यश: ख्र यद्दश: - षष्ठीतत्पुरुषसमास:, यद्दश: एव पुण्डरीकं ख्र यद्दश:पुण्डरीकम् ख्र कर्मधारयसमास:, यद्दश:पुण्डरीकस्य अन्त: यद्दश:पुण्डरीकान्त:- षष्ठीतत्पुरुष समास:।

3.1.4) समस्या- मृगात् सिंह: पलायते (हिरण के कारण सिंह मृगराज के रूप में प्रसिद्ध है)

समस्या का अर्थ- मृग अर्थात् हिरण के कारण सिंह मृगराज के रूप में प्रसिद्ध है। उसका शौर्य एवं क्रौर्य बहुत प्रसिद्ध है। उसके स्वप्न से भी डरकर मृग दूर भाग जाते हैं। सिंह मृग को खाकर सुख पूर्वक सोता है। बकरी को मारने वाला भी वीर सिंह है। वह मृग से पलायन करता है यह तो बिल्कुल विपरीत बात है।

अत: यह समस्या निश्चय ही जटिल है। कवि ने अपनी प्रतिभा के सामर्थ्य से इस समस्या का मनोहर परिहार प्रदर्शित किया है

हीनहत्यादधात्येव लाघवं महतामपि।
इति मत्वा द्विपद्वेषी मृगात् सिंह: पलायते॥ (सुभा.र.भा. समस्या-4)

हीनहत्या अर्थात् अपने से तुच्छ अथवा दुर्बलों को मारना श्रेष्ठ प्राणियों की लघुता को ही उत्पन्न करती है, यह सोचकर ही गज शत्रु सिंह मृग से पलायन कर जाता है।

अन्वयार्थ- हीनहत्या = सामर्थ्य की अपेक्षा से अपने से तुच्छ अथवा दुर्बलों को मारना, महतामपि = श्रेष्ठ प्राणियों की भी, लाघवम् = लघुता, तुच्छता का भाव, दधात्येव = निश्चय ही उत्पन्न करती है इति मत्वा = यह सोचकर द्विपद्वेषी = गज का शत्रु, सिंह: = केसरी, मृगात्-हिरण से, पलायते = पलायन कर जाता है।

भावार्थ- यहाँ कवि का आशय ऐसा है कि मेरे समान बलवान मृग नहीं होता है। इसलिए युद्धादि साहसिक कार्य तो दो समान बलिष्ठों के मध्य होना चाहिए, ऐसा नियम है। असमानों में युद्ध अधार्मिक होता है। बलहीनों के साथ बलिष्ठ युद्ध नहीं करते। अत: सिंह मृग को पाकर अपनी प्रतिष्ठा भङ्ग हो जाने के भय से मृग से दूर चला जाता है, ऐसा कवि का आशय है। इस प्रकार मृग से सिंह के पलायन में प्रतिष्ठा- निरूपण कारण को उपस्थापित करके कवि ने समस्या का समुचित परिहार प्रदर्शित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

हीनहत्या- हीनस्य ख्रहत्या ख्र हीनहत्या- षष्ठी तत्पुरुष समास:।

दधाति + एव - दधात्येव -यण् सन्धि:।

3.1.5 समस्या- चींटी चन्द्रमण्डल को चूमती है

चींटी चन्द्रमण्डल को चूमती है,यह समस्या का तात्पर्य है। इस समस्या का रहस्य यह है कि भूमि पर स्थित चींटी अन्तरिक्ष में स्थित चन्द्रबिम्ब को चूमती है इस वचन से समस्या की कठिनता बढ़ गई। यह असम्भव रूप कथन निश्चय ही बडी समस्या है। कोई कवि इसका परिहार प्रस्तुत करता है। यथा

ध्यान दें:

सतीवियोगेन विषण्णचेतसः प्रभोः शयानस्य हिमालयगरौ।
शिवस्य चूडाकलितं सुधाशया पिपीलिका चुम्बति चन्द्रमण्डलम्॥

देवी सती के वियोग से चींटी हिमालय नामक पर्वत में शयन करते हुए खिन्न मनस्क जगत् के स्वामी शङ्कर के चूडा में स्थित चंद्र बिम्ब को अमृत की इच्छा से चुम्बन करती है।

अन्वयार्थ- सतीवियोगेन = सतीदेवी के वियोग से, पिपीलिका = चींटी नामक जन्तु, विषण्णचेतसः= खिन्नमन वाले का, हिमालये = हिमालय नामक, गिरौ = पर्वत पर, शयानस्य = शयन करते हुए का, प्रभोः = जगत्स्वामी के, शिवस्य= शङ्कर के, चूडाकलितम् = चूडा पर स्थित, चन्द्रमण्डलम् = चन्द्र बिम्ब को, सुधाशया = अमृत की इच्छा से, चुम्बति = चुम्बन करती है।

भावार्थ- दक्ष प्रजापति की पुत्री सती पहले शिव की पत्नी थीं। उसने यज्ञकुण्ड में देह त्याग कर दिया ऐसी पुराणकथा सुनी जाती है। तब पत्नी वियोग से शिव दुःखी हो गये। दुःखी होकर वे हिमालय पर्वत में ही शयन किए हुए थे। तब उनके सिर पर स्थित चंद्रबिम्ब भूमि से स्पर्श हो गया। चंद्र से अमृत का सर्वण होता है ऐसी प्रसिद्धि है। अमृतरस की उत्कण्ठा से अमृतरस को पीने के लिए पिपीलिका चंद्रबिम्ब को चूमती है। इस प्रकार यहाँ कवि पौराणिक वृत्तान्त का आश्रय लेकर अत्यन्त रमणीय रीति से समस्या का परिहार सिद्ध करते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सत्याः वियोगः सतीवियोगः - षष्ठी तत्पुरुष समासः। विषण्णचेतसः- विषण्णं चेतः यस्य सः विषण्णचेताः तस्य विषण्णचेतसः ख्रबहुव्रीहिसमासः। सुधाशया-, सुधायाः आशा सुधाशा तया सुधाशया- षष्ठी तत्पुरुष समासः।

3.1.6 समस्या- यह सती पति के सामने कामभाव से ससुर का आलिङ्गन करती है

समस्या का अर्थ- यह साध्वी पति के सामने कामभाव से ससुर का आलिङ्गन करती है, यह समस्या का अर्थ है।

समस्या का स्वरूप यह है कि सती स्त्री अपने पति को देवता मानते हुए कामविचार से पर पुरुष को स्वप्न में भी नहीं देखती है, ऐसा लोक में सुना जाता है। किन्तु यह साध्वी पतिदेव के सामने ही कामावेग से पति का आलिङ्गन नहीं करती है, अपितु ससुर का आलिङ्गन करती है। यह व्यवहार गणिका (सेक्स वर्कर) का हो सकता है। किन्तु साध्वी का ऐसा व्यवहार है। केसा यह समस्या का काठिन्य है। फिर भी किसी कवि की प्रतिभा यहाँ समस्या का परिहार करती है। यथा-

कदाचित्पाञ्चाली विपिनभुवि भीमेन बहुशः
कृशाङ्गि श्रान्तासि क्षणमिह निषीदेति गदिता।
शनैः शीतच्छायं तटविटपिनं प्राप्य मुदिता।
पुरः पत्युः कामात् श्वशुरमियमालिङ्गति सती॥ (सुभा.र.भा. समस्या-35)

अन्वयार्थ- कदाचित् = किसी दिन, विपिनभुवि = वनप्रदेश में, कृशाङ्गि = हे तन्वङ्गि, बहुशः = प्रायः, श्रान्तासि = थक गई हो, इह = यहाँ, क्षणम् = क्षणभर तक, निषीद = बैठो, इति = इस प्रकार, भीमेन = भीमसेन वृकोदर द्वारा, गदिता = कहा गया, इयम् = यह, सती = साध्वी, पाञ्चाली = द्रौपदी, शनैः = मन्द-मन्द, शीतच्छायं = शीतल छायायुक्त, तटविटपिनं = पास में स्थित वृक्ष, प्राप्य = पास जाकर,

ध्यान दें:

मुदिता = सन्तुष्ट, पत्युः = भीम के, पुरः = सामने, कामात् = काम भाव से, श्वशुरम् = वायु को, आलिङ्गति = गले लगाती है।

भावार्थ- महाभारत में पाण्डवों का वनवास वृत्तान्त है। उसका आश्रय लेकर कवि इस समस्या का परिहार करता है। पाण्डवों के वनवास प्रसङ्ग में ग्रीष्मकाल आया। एक दिन गर्मी से थकी द्रौपदी को देखकर भीम ने कहा कि हे द्रौपदी! तुम थक गयी हो। यहाँ कुछ समय तक बैठो। तब भीम के प्रेमवचन सुनकर वह वहीं शीतल छाया युक्त वृक्ष के पास जाकर बैठ गयी। उससे उसे बडा आनन्द मिला। वहाँ वायु भी अच्छी प्रकार से बह रही थी। तब द्रौपदी गर्मी से उत्पन्न थकान को दूर करने के लिए वायु का सेवन करती है। वायु भीम के पिता हैं। इसीलिए वह द्रौपदी के ससुर भी हो जाते हैं। इस प्रसङ्ग से सती पति के सामने ससुर का आलिङ्गन करती है यह सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार समस्या का परिहार प्रदर्शित किया गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

विपिनभुवि- विपिनस्य भूः विपिनभूः- षष्ठी तत्पुरुष समासः, तस्यां विपिनभुवि।

तटविटपिनम्- तटस्य विटपी तटविटपी तं तटविटपिनम् - षष्ठी तत्पुरुष समासः।

पाठगत प्रश्न-3.1

1. स्वर्णकलश किसके हाथ से गिर गया?
2. कहाँ से स्वर्णकलश हाथ से गिर गया?
3. चाणूर कौन है?
4. आकाश कहाँ भ्रमित होता है?
5. जगद्देवः इसका विग्रह क्या है?
6. द्विपद्वेषी कौन है?
7. ठठठंठठः इत्यादि किसका अनुकरण शब्द है?
8. भीम किसका पुत्र है?
9. क्या पुण्डरीक रूप से कल्पित किया गया है?
10. हीन हत्या कौन करता है?

3.2) प्रहेलिका श्लोक

कृष्णमुखी न मार्जारी द्विजिह्वा न च सर्पिणी।
पञ्चभर्त्री न पाञ्चाली यो जानाति स पण्डितः॥ (सुभा.र.भा. प्रहेलिका-25)

अन्वयार्थ- कृष्णमुखी= श्यामलवर्णात्मकमुखी, न मार्जारी= बिडाली नहीं है, द्विजिह्वा= दो जीभ हैं जिसकी, न च सर्पिणी = सर्पिणी नहीं है, पञ्चभर्त्री= पाँच पतियों के साथ, न पाञ्चाली = द्रौपदी नहीं है, यः जानाति= जो जानता है, स= वह जन, पण्डितः= वह विद्वान है।

भावार्थ- कोई श्यामल वर्णात्मक मुखी है। परन्तु वह मार्जारी नहीं है। यद्यपि वह दो जीभ

ध्यान दें:

धारण करती है फिर भी वह सर्पिणी नहीं है। वही पाँच पतियों के साथ है। किंतु द्रौपदी नहीं है। ऐसी विलक्षणा को वह विद्वान है यही तात्पर्यार्थ है। प्रिय छात्रों, इसी प्रकार आप स्वयं सोचकर जानो और पण्डित बनो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

कृष्णमुखी- कृष्णं मुखं यस्याः सा कृष्णमुखी, बहुव्रीहि समासः।
द्विजिह्वा ख्र द्वे जिह्वे यस्याः सा द्विजिह्वा- बहुव्रीहि समासः।
पञ्चभर्त्री- पञ्च भर्तारः यस्याः सा पञ्चभर्त्री- बहुव्रीहि समासः।
वने जाता वने त्यक्ता वने तिष्ठति नित्यशः।
पण्यस्त्री न तु सौ वेश्या यो जानाति स पण्डितः॥ (सुभा.र.भा. प्रहेलिका-2)

अन्वयार्थ- सा = वह, वने = वन में, जाता = उत्पन्न हुई, वने = जल में, त्यक्ता = त्यागी गई, नित्यहा = सर्वदा, तिष्ठति - रहती है, पण्यस्त्री = धन से खरीदने योग्य स्त्री, न तु वेश्या = वह वेश्या नहीं है, यः = जो व्यक्ति, जानाति - जानता है, स पण्डितः - वह कुशल पण्डित है।

भावार्थ- वह कोई वन में ही उत्पन्न हुई है। जल में ही त्यागी जाती है। वह जल में ही रहती है। उसी प्रकार वह धन से खरीदकर उपभोग की जा सकती है, किंतु वह वेश्या नहीं है। ऐसी विलक्षणता को जो सोचकर जान सकता है वह कुशल पण्डित है। प्रिय छात्रों, इसी प्रकार आप स्वयं सोचकर जानो और पण्डित बनो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

पण्यस्त्रीः- पण्या च असौ स्त्री पण्यस्त्री - कर्मधारयसमासः
वनम् इति पदं अरण्यार्थे यथा वर्तते तथा जलार्थेऽपि वर्तते।
आपः स्त्रीभूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम्।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम्॥ (इत्यमरः)
वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रत् न घटो न मेघः॥
(सुभा . र.भा.प्रहेलिका - 41)

अन्वयार्थ- वृक्षाग्रवासी= वृक्ष के ऊपर रहता है, न च पक्षिराजः= पक्षिश्रेष्ठ नहीं है, त्रिनेत्रधारी= तीन नेत्र हैं जिसके, न च शूलपाणिः= वह शिव नहीं है, त्वग्वस्त्रधारी= त्वग्रूप (छाल) वस्त्र धारण करता है, न च सिद्धयोगी = वह योगीपुरुष नहीं है, जलं= जल, बिभ्रत्= धारण करता हुआ, न घटः = घड़ा नहीं है, न मेघः = न मेघ है।

भावार्थ- कोई वैसा पदार्थ विशेष है जो वृक्ष के ऊपर रहता है। किन्तु वह पक्षी श्रेष्ठ नहीं है। तीन नेत्र धारण करता है। परन्तु वह शिव नहीं है। वह त्वग्रूप रूप वस्त्र धारण करता है किन्तु वह योगी पुरुष नहीं है जो वृक्ष की छाल से निर्मित वस्त्र धारण करे। वह जल भी धारण करता है। किन्तु यह घड़ा नहीं है, न ही मेघ है।

इस प्रकार अत्यन्त विचित्र पदार्थ विशेष क्या होना चाहिए ? ऐसा कवि पूछ रहा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

पक्षीराजः- पक्षिणां राजा पक्षिराजः, षष्ठी तत्पुरुषसमासः।

ध्यान दें:

त्रिनेत्रधारी- त्रीणि नेत्राणि धारयितुं शीलम् अस्य अति

त्रिनेत्रधारी- उपपदसमासः।

शूलपाणिः- शूलः पाणौ यस्य सः शूलपाणी बहुव्रीहि समासः।

त्वग्वस्त्रवासी-त्वक् एव वस्त्रं त्वग्वस्त्रम् कर्मधारयसमासः, त्वग्वस्त्रं

वस्तुं शीलम् अस्येति त्वग्वस्त्रवासी - उपपदसमासः।

सिद्धयोगी- सिद्धश्च असौ योगी सिद्धयोगी कर्मधारयसमास।

पाठगत प्रश्न- 3.2

11. पण्यस्त्री के समान कौन कही गयी है?
12. लेखनी के पाँचपति कौन हैं?
13. द्विजिह्वा कौन है?
14. नारियल और योगी के वस्त्र कैसे हैं?
15. पत्र का स्फुट वक्तृत्व कैसे सिद्ध होता है?
16. पक्षिराजः का विग्रह क्या है?

वृक्षस्याग्रे च फलं दृष्टं फलाग्रे वृक्ष एव च।
अकारादिसकारान्तं यो जानाति स पण्डितः॥

अन्वय- वृक्षाग्रे फलं दृष्टम्,फलाग्रे वृक्षः एव च। अकारादि सकारान्तम्

यः जानाति स पण्डितः (अस्ति)।

अन्वयार्थ- वृक्षाग्रे= पादप के अग्रभाग में, फलं दृष्टम् = देखा गया, फलाग्रे = फल के अग्रभाग में, वृक्षः = पादप ही, अकारादि सकारान्तम् = आरम्भ में अकार विशिष्ट, अन्ते सकार विशिष्टम् च यः जानाति = जानता है, स = वह, पण्डितः = विद्वान् है।

भावार्थ- इस प्रहेलिका में एक प्रश्न है। उसके उत्तर प्राप्ति के लिए इस श्लोक में अनेक सूचनाएँ दी जा रही हैं। वह प्रश्न है- वह कौन-सा फल है जो वृक्ष के अग्र भाग में लगता है। क्या उस फल के अगले भाग में वृक्ष की भाँति पत्ते होते हैं। और उसके नाम का पहला अक्षर अकार है, अंतिम अक्षर सकार है। इस प्रकार यहाँ चौथी सूचना दी गयी है। इसके बाद जो व्यक्ति इसका उत्तर देने में समर्थ होता है वह महापण्डित है। इसका उत्तर अनानास फल है। अनानास फल वृक्ष के अग्र भाग में लगता है। अनानास फल के अगले भाग में वृक्ष की भाँति पत्ते होते हैं। अनानास का पहला अक्षर अकार है, अंतिम अक्षर सकार है। इस प्रकार इस प्रहेलिका का उत्तर अनानास फल है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वृक्षाग्रे - वृक्षस्य अग्रः वृक्षाग्रः इति, षष्ठी तत्पुरुषसमासः, तस्मिन् वृक्षाग्रे
- दृष्टम् - दृश् - धातोः, क्तप्रत्यये, दृष्टम् इति रूपम्।
- अकारादिसकारान्तम्- अकारः आदिः यस्य तत् अकारादि इति बहुव्रीहि समासः। सकारः अन्ते

ध्यान दें:

यस्य तत् सकारान्तम् इत्यपि, बहुव्रीहि समासः। अकारादि च तत् सकारान्तम् अकारादिसकारान्तम् इति कर्मधारयसमासः।

सन्धि युक्त शब्द

- वृक्ष एव = वृक्षः + एव।
- यो जानाति = यः + जानाति।

नित्यं रथेन गच्छामि, अश्वाः मे रथं वहन्ति।
सम्राटऽस्मि नरो नास्मि नासुरोऽस्मि निशाचरः॥

अन्वय- नित्यं रथेन गच्छामि, अश्वाः में रथं वहन्ति। सम्राट् अस्मि नरः न अस्मि, असुरः अस्मि निशाचरः न।

अन्वयार्थ- नित्यं = सर्वदा रथेन =रथ से गच्छामि=जाता हूँ, अश्वाः = घोड़े, में = मेरे रथं = रथ को वहन्ति = वहन करते हैं, सम्राट् = राजा, अस्मि = हूँ, नरः = मनुष्य, न अस्मि = नहीं हूँ, असुरः प्राणदायकः= प्राणदाता, अस्मि = हूँ, निशाचरः = राक्षस।

भावार्थ- इस प्रहेलिका में एक प्रश्न है। उसके उत्तर प्राप्ति के लिए इस श्लोक में अनेक सूचनाएँ दी जा रही हैं। वह प्रश्न है वह कौन है जो राजा की तरह रथ से ही चलता है? अश्व उस रथ को ढोते हैं। वह सम्राट् अर्थात् सम्यक् शोभायुक्त है, परंतु स्वयं मनुष्य नहीं है। वह स्वयं सभी के लिए प्राण देता है, परंतु निशाचर नहीं है। इस प्रश्न का उत्तर है सूर्य। क्योंकि सूर्य नृपवत् आकाश में सारथि अरुण के द्वारा सञ्चालित रथ से चलता है। सात अश्व सूर्य के रथ को खींचते हैं। सूर्य आकाश में अत्यधिक प्रकाशित होता है। इस कारण वह सम्राट् है। परंतु सूर्य है न कि मनुष्य।वह प्राण देता है यह हम सब जानते हैं। वही जगत् का उत्पत्तिकर्ता है, अतः असुर है परंतु वह रात्रिचर है अर्थात् रात्रि में नहीं चलता है, वह तो दिन में चलता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सम्राट् = सम्यक् राजते इति सम्राट्।
- निशाचरः = निशायां चरति इति निशाचरः। तस्य राक्षसः इत्यर्थः।

सन्धि युक्त शब्द

- अश्वा वहन्ति = अश्वाः + वहन्ति
- सम्राटऽस्मि = सम्राट् + अस्मि
- नासुरोऽस्मि = न + असुरः + अस्मि।

अनेकसुशिरं वाद्यं कान्तं च ऋषिसंज्ञितम्।
चक्रिणा च सदाराध्यं यो जानाति स पण्डितः॥

अन्वय- अनेक सुशिरं वाद्यं कान्तम् ऋषिसंज्ञितं चक्रिणा च सदा आराध्यं यः जानाति स पण्डितः।

अन्वयार्थ- अनेकसुशिरम् = अनेक सुंदर सिरों से विशिष्ट,वाद्यं = वादनसाधन, वकारादि वा, कान्तं = सुन्दर, ककारान्त, ऋषिसंज्ञितं = ऋषि सदृश विशिष्ट, चक्रिणा = विष्णु द्वारा सर्प द्वारा च, सदा = सर्वदा, आराध्यं = पूज्य, यः जानाति = जो जानता है, स पण्डितः = वह विद्वान् है।

पाठ-3

प्रहेलिका और समस्या श्लोक

ध्यान दें:

भावार्थ यह पहेली भ्रम उत्पन्न करने वाली है। जो इस पहेली को पहली बार पढ़ता है, वह इसका यह अर्थ ही समझता है कि वैसा कोई वाद्य है कि जो अनेक सुंदर सिरों से विशिष्ट सुंदर ऋषियों के सदृश विशिष्ट है, और विष्णु के द्वारा सदैव पूज्य है। इस प्रकार प्रहेलिका का अर्थ करने के लिए पाठक इसके उत्तर का निर्णय करने में कभी समर्थ नहीं हो सकते हैं। यह अर्थ तो भ्रमात्मक है। इसलिए यह अर्थ यहाँ विचारणीय नहीं है। यहाँ प्रकृत प्रश्न का स्वरूप है कि वैसी कोई वस्तु है जिसके बहुत से सिर हैं। जिसका आदि अक्षर वकार है और अंतिम अक्षर ककार है,किंतु जिसका नाम किसी ऋषि के नाम के समान है। और वह वस्तु सर्पों के लिए सर्वदा इच्छित है। जो इस प्रश्न का उत्तर देने में समर्थ है उसे महान् विद्वान् जानना चाहिए।वह उत्तर है- वाल्मीकि अर्थात् सर्पों का निवास स्थान। वाल्मीकि में बहुत से छिद्र होते हैं और वाल्मीकि का आदि अक्षर वकार है तथा अंतिम अक्षर ककार है। इसका नाम ऋषि वाल्मीकि के नाम के समान है। और वह वस्तु सर्पों का निवासस्थान होने से उन्हें अत्यंत प्रिय है। इस प्रकार इस प्रहेलिका का उत्तर वाल्मीकि है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. अनेकसुशिरम् शोभनानि शिरांसि सुशिरांसि इति, गतिसमासः।

   अनेकानि सुशिरांशि यस्य तत् अनेकसुशिरम् इति, बहुव्रीहिसमासः।

2. वाद्यम्- व् आद्यं यस्य तत् वाद्यम् इति, बहुव्रीहिसमासः।

3. कान्तम्- क् अन्ते यस्य तत् कान्तम् इति, बहुव्रीहिसमासः।

सन्धि युक्त शब्द

1. सदाराध्यम् - सदा + आराध्यम्।

2. स पण्डितः = सः + पण्डितः।

न तस्यादिर्न तस्यान्तो मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद् वद॥

अन्वय- न तस्यादिः (अस्ति), न तस्य अन्तः (अस्ति), तस्य मध्ये यः तिष्ठति। तव अपि अस्ति, मम अपि अस्ति, यदि जानासि तद् वद्।

अन्वयार्थ- न = नकार, तस्यादिः = उसका आदि अक्षर, न = नकार, तस्य अन्तः = अन्तिमाक्षर, तस्य मध्ये = उसके मध्यभाग में, यः = यकार, तिष्ठति = रहता है, तव = तुम्हारा, अपि अस्ति = है, मम = मेरा अपि अस्ति है, यदि जानासि = जानते हो, तद् वद = बताओ।

भावार्थ- यह प्रहेलिका भी भ्रम उत्पन्न करने वाली है। जो इस प्रहेलिका को प्रथम बार पढता है वह इसका अर्थ समझता है कि ऐसी कोई वस्तु है,जिसके आरम्भ में नकार है तथा जिसकी समाप्ति भी न से ही होगी। अर्थात् वह वस्तु अनादि और अनंत है। किंतु वह सभी के पास है। प्रहेलिका के इस अर्थ के लिए पाठक कभी भी इसका उत्तर निर्धारण करने में समर्थ नहीं हो पाता है। यह अर्थ तो भ्रमात्मक ही है। इस कारण यह अर्थ यहाँ विचारणीय नहीं है। यहाँ प्रश्न है कि ऐसी कोई वस्तु है, जिसके आरम्भ में नकार है तथा अंत में भी नकार है किंतु उसका मध्य अक्षर य है और वह सभी के पास है।

वह उत्तर है नयन अर्थात् चक्षु। नयन का आदि अक्षर नकार है,अंतिम अक्षर भी नकार ही है। और मध्य में यकार है। और वह सभी प्राणियों का नयन है। इस प्रकार इस प्रहेलिका का उत्तर नयन निर्धारित होता है।

पाठ-3

प्रहेलिका और समस्या श्लोक

ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

1. तस्यादिर्न = तस्य + आदिः + न।
2. तस्यान्तः = तस्य +अन्तः।
3. यस्तस्य = यः + तस्य।

मुखे हस्तद्वयं धत्ते, सर्वथा जागरूका सा।
प्रतिक्षणं वदन्तीव, प्राणाश्च पिञ्जिताः सदा॥

अन्वय- सा मुखे हस्तद्वयं धत्ते, सर्वथा जागरूका, प्रतिक्षणं वदन्ति इव, (तस्याः) प्राणाः सदा पिञ्जिताः।

अन्वयार्थ- सा मुखे = मुख में, हस्तद्वयं = दो भुजाएँ धत्ते = धरति, सर्वथा = सर्वदा जागरूका = जागने वाली, प्रतिक्षणं = हर समय, वदन्ति = कहती- सी, (तस्याः) प्राणाः = प्राण, सदा = सर्वदा, पिञ्जिताः = बँधा हुआ।

भावार्थ- इस प्रहेलिका में एक प्रश्न है। उसके उत्तर प्राप्ति के लिए इस श्लोक में अनेक सूचनाएँ दी जा रही हैं। वह प्रश्न है- वैसा कौन व्यक्ति है, जिसके मुख में ही दो हाथ धारण करता है, अर्थात् उसके मुख में ही दो हाथ हैं। किन्तु वह कभी सोता नहीं है सदा जागता ही रहता है। और वह सभी मनुष्यों के लिये प्रत्येक क्षण का ज्ञान कराता है। परंतु उसके प्राण बँधे हुए हैं,अर्थात् वह स्वाधीन नहीं है। इस प्रकार इस प्रश्न समाधान के लिये चार सूचनाएँ दी गयी हैं।

इस प्रश्न का उत्तर है घटिका अर्थात् घडी। घटिका के मुखभाग में अर्थात् सम्मुख भाग में समय निर्धारण के लिये दो बडे दण्ड (सुइयाँ) होते हैं। उन दोनों में से एक मिनट की सुई कही जाती है तथा दूसरी घण्टे की सुई कही जाती है। और वे दोनों दण्ड घटिका के हस्त स्वरूप हैं। और घटिका सदा जागती रहती है। रात्रि में जब सभी लोग सोते रहते हैं तब भी वह अपने समय बोध के कार्य में संलग्न रहती है। कभी नहीं सोती है। इस प्रकार वह सभी मनुष्यों के लिये प्रत्येक क्षण का ज्ञान करवाती है। घटिका के माध्यम से ही लोगों का कार्य सम्यक्तया चलता है। समय ज्ञान के बिना कोई भी सम्यक् रूप से कार्य सम्पन्न नहीं कर सकता। अतः समय ज्ञापन द्वारा वह सभी का महान् उपकार करती है। परंतु वह स्वाधीन नहीं है। उसके प्राण बँधे हुए हैं। यदि विद्युत्कोश समाप्त हो जाता है तो वह बन्द हो जाती है, नया विद्युत्कोश प्राप्त होने पर वह पुनः चलने (जीवित) लगती है। इस प्रकार इस प्रहेलिका का उत्तर है घटिका।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. धत्ते- धा धातु आत्मनेपदी लट्लकार प्रथम पुरुष।

सन्धि युक्त शब्द

1. वदन्तीव = वदन्ति + इव।
2. प्राणाश्च = प्राणाः + च।

सदारिमद्ध्यापि न वैरियुक्ता
नितान्तरक्तापि सितैवनित्यम्।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती

ध्यान दें:

का नाम कान्तेति निवेदयाशु॥

अन्वय- सदारिमध्या अपि वैरियुक्ता न, नितान्तरक्तापि नित्यं सिता एव। यथोक्तवादिनी अपि दूती न एव। का नाम कान्ता इति आशु निवेदय।

अन्वयार्थ- सदारिमध्या = सर्वदा शत्रुजन के मध्य में स्थित, मध्ये रि-रि इस अक्षरवाली, अपि वैरियुक्ता = शत्रुयुक्त, न, नितान्तरक्तापि = अत्यन्त लाल होने पर भी, नित्यं = सर्वदा, सिता एव= श्वेतवर्णा, यथोक्तवादिनी = स्पष्टवादिनी, अपि दूती न एव, का नाम कान्ता स्त्री = अन्त में ककारवती वा इति आशु = शीघ्र, निवेदय = बताओ।

भावार्थ- यह प्रहेलिका भ्रम उत्पन्न करने वाली है। जो इस प्रहेलिका को प्रथम बार पढ़ता है वह इसका अर्थ समझता है की ऐसी कोई स्त्री है जो सदा शत्रुजनों के मध्य रहती है, परंतु स्वयं का शत्रुओं के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। विषयों में अत्यंत आसक्ति है। परंतु वह सीता की भाँति अति पवित्र है। वह सदा अतिस्पष्ट बोलती है परंतु वह किसी की दूती नहीं है। प्रहेलिका को पूरी पढ़ने पर सर्वत्र विरोधाभास प्रतीत होता है। प्रहेलिका का इस प्रकार अर्थ करने पर पाठक इसका उत्तर निर्धारण करने में समर्थ नहीं हो सकता। यह अर्थ तो भ्रमात्मक ही है। इसलिए यह अर्थ यहाँ नहीं विचारना चाहिए। यहाँ प्रश्न है वैसी कौन है जो जिसके नाम के मध्य में रि है, अत्यंत लाल वर्ण होने पर भी श्वेत वर्ण से युक्त है। दूत के समान वह मनुष्य के मुख से सुनती है तथा बाद में वैसा ही बोलती है।क्या वह सारिका है। जिसके नाम का अंतिम अक्षर भी ककार ही है। अत: इस पहेली का उत्तर सारिका है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. वैरियुक्ता - वैरिभि: युक्ता वैरियुक्ता इति तृतीयातत्पुरुषसमास।
2. नितांतरक्ता- नितांतं रक्ता इति नितांतरक्ता।
3. कान्ता- क् अन्ते यस्या: सा कान्ता इति बहुव्रीहिसमास:।
4. निवेदय- नि पूर्वकात् विद् धातो: णिच्प्रत्यये लोटि मध्यमपुरुषैकवचने निवेअय इति रूपम्।

सन्धि युक्त शब्द

1. सदारिमध्यापि = सदा+अरिमध्या + अपि।
2. नितान्तरक्तापि = नितान्तरक्ता+अपि।
3. सितैव= सिता + एव।
4. निवेदयाशु = निवेदय + आशु।

आदौ भा शोभते नित्यं रतं पश्चाद् विराजते।
देवतानां प्रियं धाम तवाप्यस्ति ममापि च॥

अन्वय- आदौ नित्यं भा शोभते,पश्चात् रतं विराजते। देवतानां प्रियं धाम, तव अपि अस्ति मम अपि च।

अन्वयार्थ- आदौ = आदिभाग में, नित्यं = सर्वदा, भा = भा यह अक्षरं, शोभते = सुशोभित होता है, पश्चात् = पृष्ठभाग में, रतं = रत- यह शब्द, विराजते = सुशोभित होता है, देवतानां = अमरों का, प्रियं = इष्ट, धाम = स्थान, तव = आपका अपि अस्ति = है, मम अपि च = मेरा

ध्यान दें:

भावार्थ- इस पहेली में किसी स्थान के कुछ वैशिष्ट्य कहे गये हैं। पाठक के द्वारा श्लोक के पढने पर उन वैशिष्ट्यों को जानकर उस वैशिष्ट्य से युक्त स्थान क्या है यह निर्धारित करना चाहिए। वे वैशिष्ट्य हैं जैसे- उस स्थान के आदि में हमेंशा भा रहता है अर्थात् उसके नाम का आदि शब्द भा है, अथवा उस स्थान में हमेंशा दीप्ति (प्रकाश) है,यह भी कहा जा सकता है। किंतु उस स्थान के नाम के पश्चात् रत रहता है,अर्थात् उस नाम का अंतिम शब्दरत है। और वह स्थान देवताओं के लिए अति प्रिय है। और वह स्थान हम सबका है।

वह स्थान भारत है। भारत इस नाम का आदि शब्द भा है, किंतु श्रीरामचंद्र व्यास-वाल्मीकि-आदि महान् ज्ञानियों ने इस भारतवर्ष में जन्म लिया। इस कारण उनके ज्ञानप्रभाव से भारतदेश सदैव दीप्तिमान रहता है। और भारत इस नाम का अंतिम शब्द रत है। भारत देश सभी देवताओं का अति प्रिय है। देवता भारतवर्ष में बार-बार जन्म लेना चाहते हैं। यह भारत देश हमारे सभी संस्कृत प्रेमियों का अपना देश है। इस प्रकार इस प्रहेलिका का उत्तर है भारत।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. विराजते = वि उपसर्गपूर्वक राज् - धातु लट्लकार, प्रथमपुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

1. पश्चाद् विराजते = पश्चात् + विराजते।
2. तवाप्यस्ति = तव + अपि + अस्ति।
3. ममापि = मम + अपि।

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखःस्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

अन्वय- अपदः दूरगामी, साक्षरः (परंतु) न पण्डितः, अमुखः स्फुटवक्ता च, या (एतं), जानाति स पण्डितः।

अन्वयार्थ- अपदः = पादहीन, दूरगामी = दूरगमनकारी, साक्षरः = अक्षरयुक्त (परंतु), न पण्डितः = विद्वान् नहीं है, अमुखः = मुखहीन, स्फुटवक्ता = स्पष्टवक्ता, यः = जो जन (एतं) जानाति = जानता है, स पण्डितः = ज्ञानी।

भावार्थ- इस पहेली में किसी पदार्थ के परस्पर विरुद्ध कुछ वैशिष्ट्य कहे गये हैं। पाठक के द्वारा श्लोक के पढ़ने पर उन वैशिष्ट्यों को जानकर उस वैशिष्ट्य से युक्त पदार्थ क्या है यह निर्धारित करना चाहिए। इस पहेली के उत्तर निर्णय में पाठकों को भ्रम होता है, कि यहाँ पदार्थ के जो वैशिष्ट्य कहे गये हैं वे सभी परस्पर विरुद्ध हैं अर्थात् वे सभी वैशिष्ट्य एक ही पदार्थ में एक साथ नहीं हो सकते। अतः पाठक को यह श्लोक एकाग्रता से पढ़ना चाहिए। पदार्थ के वे वैशिष्ट्य हैं जैसे- उसके पैर नहीं हैं, परंतु पादहीन होने पर भी वह दूर तक जा सकता है। वह अक्षरों से युक्त है, पर वह विद्वान नहीं है। उसका मुख है, परंतु वह हमेशा निर्भय व स्पष्ट बोलता है। जो इसका उत्तर जानता है वह महाज्ञानी ही है।

वह उत्तर पत्र है। पत्र के दो पैर हैं परंतु वह पुस्तक रूप से अथवा अन्य रूप से एक स्थान से बहुत दूर दूसरे स्थान पर अनायास ही जाता है। इस प्रकार पैर नहीं होने पर भी पत्र एक स्थान से अन्य स्थान पर भी पहुँच जाता है। किंतु जब पुस्तक बनायी जाती है तब पुस्तकों के पत्रों में बहुत से अक्षर

ध्यान दें:

मुद्रित किये जाते हैं। बहुत ज्ञानपूर्ण वाक्य पत्रों में होते हैं। उन्हें पढने से मनुष्य ज्ञान अर्जित करते हैं। परंतु प्रचुर अक्षरों से विशेष होने पर भी पत्र स्वयं मूर्ख होते हैं। उसे स्वयं का ज्ञान कुछ भी नहीं होता। पत्र का मुख भी नहीं है। परंतु वह अपने शरीर में लिखित ज्ञानपूर्ण बहुत से वाक्यों को यथारूप में ही पाठकों के लिए सदैव प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार इस पहेली का उत्तर है पत्र।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. अपदः = अविद्यमानः पदं यस्य स अपदः इति बहुव्रीहिसमासः।
2. दूरगामी = दूरं गच्छतिइति दूरगामी।
3. अमुखः = अविद्यमानं मुखं यस्य तत् अमुखः इति बहुव्रीहिसमासः।

सन्धि युक्त शब्द

1. अपदोदूरगामी = अपदः + दूरगामी

पाठगत प्रश्न-3.3

17. किस फल के आगे वृक्ष की भाँति पत्ते होते हैं ?
18. सम्राट् का विग्रह क्या है ?
19. अनेक सुशिरम् इसका विग्रह क्या है और क्या समास है ?
20. साँपों के द्वारा क्या आराध्य है ?
21. कौन सदा जागता रहता है ?
22. कौन स्पष्टवादिनी है ?
23. देवताओं का प्रिय स्थान क्या है ?
24. अमुख परंतु स्पष्ट वक्ता कौन है ?

पाठ सार

इस पाठ में छह समस्याएँ और बहुत-सी प्रहेलिकाएँ पढी गई हैं। सभी समस्याओं व प्रहेलिकाओं का समाधान यहाँ सम्यक्तया ही है।

ठठण्ठठण्ठं ठठठण्ठठण्ठः इस समस्या का समाधान वह ध्वनि है जो हाथ से गिरकर कलश सोपानमार्ग से कलशध्वनि उत्पन्न होती है। शतचंद्रं नभस्थलं इस समस्या का समाधान है कि बलराम के कराघात से कम्पित चाणूर ने शतचंद्रात्मक आकाश देखा। गगनं भ्रमरायते इस समस्या का समाधान है कि राजा के कीर्ति रूपी कमल में आकाश भी भ्रमरवत् रहता है। मृगात् पलायते इस समस्या का समाधान है कि सिंह मृग को पाकर भी अपनी प्रतिष्ठाभङ्ग के भय से तुच्छमृग से पलायन कर जाता है। पिपीलिका चुम्बति चंद्रमण्डलम् इस समस्या का समाधान है कि हिमालय पर्वत में शयन करते हुए शिव के सिर में विद्यमान चंद्र से स्रवित अमृत को पिपीलिका चूमती है। पुरः पत्युः कामात् श्वशुरमियमालिङ्गति सती इस समस्या का समाधान है कि क्लांत द्रौपदी पति के सामने ही वायु रूप ससुर का स्पर्श करती है।

ध्यान दें:

अनानास फल वृक्ष के अग्र भाग में होता है, उसके अग्रभाग में वृक्षवत् पत्ते होते हैं। सूर्य नित्य रथ से चलता है उसके रथ को अश्व खींचते हैं, वह प्राणदायक है, निशाचर नहीं है। वाल्मीकि के अनेक छिद्र होते हैं और वह सर्पों के लिए अति प्रिय है। नयन का आदि अक्षर नकार है तथा अन्तिम अक्षर भी नकार है। घड़ी सदैव जागते हुए प्रतिक्षण जनों को समय बताती है। सारिका रक्तवर्णा होते हुए भी श्वेतवर्ण से भी युक्त है और दूतवत जैसा सुनती है वैसा ही बोलती है। भारतवर्ष का आदि अक्षर भा है। अन्तिम शब्द रत है, और वह देवों का प्रिय स्थान है। पत्र पादहीन होने पर भी बहुत दूर चला जाता है, मुखहीन होने पर भी स्पष्ट बोलता है।

आपने क्या सीखा

- समस्या रूप काव्य का ज्ञान।
- समस्या का परिहार बोध।
- प्रहेलिकाओं से प्राप्त शिक्षाएं
- प्रहेलिका काव्य-रचना

पाठान्त प्रश्न

1. ठठंठठंठम् इस ध्वनि के कारण का वर्णन कीजिए?
2. कवि की दृष्टि से शतचन्द्र नभस्थल किसे कहा गया है?
3. गगन को कवि ने कैसे भ्रमरी सिद्ध किया है?
4. सती के ससुर-आलिङ्गन की साधुता बताइए।?
5. लेखपत्र के विरुद्ध गुणों का वर्णन कीजिए?
6. कवि की वर्णन पद्धति से नारियल का वर्णन कीजिए?
7. कवि के अनुसार लेखनी का वर्णन कीजिए?
8. पिपीलिका द्वारा किए गए चन्द्र चुम्बन को कविवचन से सिद्ध कीजिए?
9. मृग से सिंह के पलायन को सकारण निरूपित कीजिए?
10. कवि के अनुसार नौका का वर्णन कीजिए?
11. सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता इस पहेली के उत्तर की यथा ग्रन्थानुसार विवेचना कीजिए?
12. आदौ भा शोभते नित्यम् इस पहेली का उत्तर संक्षेप में लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. युवती का।
2. कामोद्वेग से।

ध्यान दें:

3. कृष्ण के द्वारा राक्षस मारा गया।
4. यश रूपी कमल में।
5. जगत् का देव जगदेव - षष्ठी तत्पुरुष समास।
6. सिंह व
7. स्वर्ण कलश का।
8. वायु का।
9. राजा का, यश।
10. महान भी लघु हो जाते हैं।

उत्तर-2

11. नौका।
12. अङ्गुली का।
13. लेखनी।
14. त्वग्वस्त्र।
15. लिखित विषय का बोध कराने के कारण।
16. पक्षियों का राजा पक्षिराज।

उत्तर-3

17. अनानास फल का।
18. सुशोभित होता है।
19. शोभनानि शिरांसि सुशिरांसि इति गतिसमासः। अनेकानि सुशिरांसि यस्य तत् अनेकसुशिरम् इति बहुव्रीहिसमासः।
20. वाल्मीकि।
21. घटिका।
22. सारिका।
23. भारत।
24. पत्र।